International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 06-02-2019; Accepted: 10-03-2019
www.educationjournal.org
Volume 4; Issue 3; May 2019; Page No. 08-09

ऐतिहासिक पुरास्थल के रूप में कौशाम्बी

डॉ० सन्तोष कुमार शुक्ल
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

कौशाम्बी नामक पुरास्थल इलाहाबाद (प्रयागराज) शहर से दक्षिण पश्चिम दिशा में 51.5 किलोमीटर की दूरी पर यमुना नदी के बायें तट पर स्थित है। कौशाम्बी की भौगोलिक स्थित $25^{0}20'$ उत्तरी अक्षांश एवं $81^{0}23'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। कौशाम्बी 'कोसम इनाम', 'गढ़वा', 'कोसम खिराज' और अनवाँ–कुनवाँ नामक गाँवों के बीच है। प्रारम्भ में कौशाम्बी इलाहाबाद जनपद में स्थित था लेकिन वर्तमान में 4 मार्च 1997 को उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री सुश्री मायावती के कार्यकाल में इसे एक पृथक जिले का स्वरूप प्रदान कर दिया गया।

कौशाम्बी को भारतीय पुरातत्त्व के मानचित्र पर रखने का श्रेय अलेक्जेण्डर कनिंधम को है जिन्होनें 1861 ई0 में यहाँ की यात्रा की थी। कनिधंम ने 1871 ई0 मे कौशाम्बी के अवशेषों पर रिपोर्ट प्रकाशित की और स्पष्ट किया कि कोसम ही प्राचीन कौशाम्बी था। कौशाम्बी का उल्लेख उत्तर वैदिक काल के बाह्मण ग्रन्थों तथा उपनिषदों में मिलता है। वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत में कौशाम्बी की स्थापना का श्रेय 'कुशाम्ब' को दिया गया है। पौराणिक परम्परा कौशाम्बी का सम्बन्ध हिस्तनापुर के कुरू राजवंश से जोड़ती है जिसके अनुसार अभिमन्यु–पुत्र परीक्षित के बाद पाँचवीं पीढ़ी में निचक्षु के शासन काल में जब हस्तिनापुर गंगा की भयंकर बाढ़ में नष्ट हो गया था, तब उसने कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया था। बौद्ध तथा जैन धर्मो के प्राचीन साहित्य में भी कौशाम्बी का अनेक बार उल्लेख मिलता है। 'अंगुत्तर निकाय' के अनुसार छठीं शताब्दी ई0 पू0 में कौशाम्बी वत्स महाजनपद की राजधानी थी और इसकी गणन छः महत्वपूर्ण नगरों में की जाती थी।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की ओर से सन् 1936–37 एवं 1937–38 दो उत्खनन सत्रों में एन0जी0 मजूमदार ने अशोक स्तम्भ क्षेत्र में उत्खन्न कराया था। तत्पश्चात कौशाम्बी में पुनः 1949 से लेकर 1964–65 ई0 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के प्रोफेसर जी0 आर0 शर्मा ने उत्खनन कराया था। कौशाम्बी के टीले में मानव–आवास के चिन्ह लगभग 6.45 किमी की परिधि में फैले हुए हैं। कौशाम्बी का टीला एक जटिल रक्षा प्राचीर (परकोटे) से घिरा हुआ था जो आयाताकार रूप में फैली हुई है। इस परकोटे का आधार यमुना नदी है जिससे रक्षा प्राचीर अर्द्धवृत्त बनाती है। कौशाम्बी में अभी तक चार विभिन्न क्षेत्रों में उत्खन्न हुए हैं।

1. अशोक स्तम्भ क्षेत्र,
2. घोषिताराम विहार क्षेत्र,
3. पूर्वी प्रवेश–द्वार के पास रक्षा–प्राचीर,
4. राजप्रसाद क्षेत्र।

अशोक स्तम्भ क्षेत्र कौशाम्बी के टीले के मध्यवर्ती भाग में जहाँ पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की ओर से एन0 जी0 मजूमदार ने कराया था, वहाँ से अशोक का लेख–रहित एक पाषाण स्तम्भ मलवे में दबा हुआ मिला था, उसे उसी स्थान पर खड़ा कर दिया गया है। इसीलिए इस क्षेत्र को अशोक स्तम्भ क्षेत्र नाम दिया गया है। सन् 1949 तथा 1950 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा उत्खनन कराया गया इस क्षेत्र से चित्रित धूसर पात्र–परम्परा, उत्तरी काली चमकीली पात्र परम्परा, उत्तर – एन0 बी0 पी0 पात्र–परम्परा के साक्ष्य पाप्त हुए हैं। इस क्षेत्र से आवास की निरन्तरता गुप्तकाल तक चलती रही। साथ ही साथ मिट्टी की मूर्तियों, सिक्कों तथा अभिलेखों के सन्दर्भ में सूचनाएं मिलती हैं।

घोषिताराम बिहार क्षेत्र कौशाम्बी के टीले के पूर्वी भाग में स्थित है। घोषित नामक सेठ ने बुद्ध तथा भिक्षुओं को ठहराने के लिए विहार का निर्माण कराया था जिसके कारण इस क्षेत्र को घोषताराम विहार क्षेत्र कहा गया। इस क्षेत्र का उत्खनन इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने 1951 से 1956 ई0 के बीच कराया था। यहाँ से विहार निर्माण के सत्रह स्तर प्रकाश में आये हैं। विहार के प्रवेश–द्वार के बगल में हारीति एवं कुबेर और गजलक्ष्मी की मिट्टी की विशालकाय मूर्तियाँ स्थापित थीं। प्रस्तर की ऐसी कलाकृतियाँ भी मिली हैं जिन पर बुद्ध का प्रतीकों के माध्यम से अंकन किया गया है। यहाँ से कुषाणकाल की लेखयुक्त कतिपय ऐसी प्रतिमाएं मिली हैं जिनका निर्माण तो मथुरा में हुआ था लेकिन बौद्ध धर्म का एक प्रसिद्ध केन्द्र होने के कारण जिसकी स्थापना भिक्षुणी बुधमित्रा ने कौशाम्बी में करायी थी। गुप्तकाल में सम्भवतः यहाँ क्षेत्रीय स्तर पर नवीन कला शैली स्थापित हो गयी थी। इसके अतिरिक्त यहाँ से कौशाम्बी के स्थानीय सिक्के, कुषाण तथा मघराजाओं के सिक्के प्राप्त होते हैं। घोषताराम से मिट्टी की दो मुहरें मिली जिन पर क्रमशः 'तोरमाण' और 'हूणराज' शब्द उत्कीर्ण है, से हूणों के आक्रमण की सूचना प्राप्त होती है।

कौशाम्बी के तीसरे चरण का उत्खनन पूर्वी प्रवेश द्वार के पास 1957–59 ई0 के बीच हुआ, जिससे रक्षा–प्राचीरों के निर्माण पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ा यहाँ की रक्षा प्राचीरों को रक्षक कक्षों तथा बुर्जो से सुसज्जित किया गया था। कौशाम्बी का चतुर्थ उत्खनन यमुना नदी से लगे हुए टीले के दक्षिणी–पश्चिमी भाग में सन् 1960 ई0 में सम्पन्न हुआ। इस उत्खनित खेत्र को 'राजप्रासाद क्षेत्र' के नाम से जाना गया, लेकिन इसका कोई अभिलेखीय प्रमाण नहीं प्राप्त हुआ है। यहाँ से पत्थर के छोटे–छोटे टुकड़े, प्लास्टर के अंश तथा उत्तरी काली चमकीली पात्र–परम्परा और उसके साथ सम्बद्ध अन्य पात्र–परम्पराओं के पात्रखण्ड बिखरे प्राप्त हुए हैं।

कौशाम्बी पुरास्थल का ऐतिहासिक महत्व के साथ ही नवीन कला शैली के रुप में भी है, जो उसके क्षेत्रीय महत्व को स्पष्ट करता है।

संदर्भ

1. घोष, अमलानन्द : एनॅ इनसाइक्लोपीडिया ऑव इण्डियन आर्कियोलॉजी, खण्ड – दो, नई दिल्ली, 1989

2. जैन, हुकुमचन्द्र : भारतीय ऐतिहासिक स्थलकोश, जैनप्रकाशन मन्दिर, जयपुर, 2003-04
3. आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया : एनुअल रिपोर्ट, भाग-1, 1871
4. शर्मा, जी0 आर0 : एक्सकेवेशन्स एट कौशाम्बी (1957-59) इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1960 एवं मेमायर्स ऑवदि आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑव इण्डिया, नं0 74, दिल्ली, 1969
5. कनिंघम, ए0 : आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, एनुअल रिपोर्ट, खण्ड – 3, 1871-72
6. मार्शल, सर जॉन : आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑव इण्डिया, एनुअल रिपेार्ट (1911-12) कलकत्ता, 1915
7. पाण्डेय, प्रो0 जयनारायण : पुरातत्त्व विमर्श, प्रमानिक पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, 1997
8. राष्ट्रीय संग्रहालय इलाहाबाद के विविध मूर्तिसंग्रह।